ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 34 बुलेटिन अवधिः 28 अप्रैल – 2 मई, 2018 दिनः शुक्रवार दिनाँकः 27 अप्रैल, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर **कृषि मौसम विज्ञान विभाग** में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	28–04–2018	29–04–2018	30–04–2018	01–05–2018	02–05–2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	2	0	10
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	36	34	34	35	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	19	18	18	17	18
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	80	85	85	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	40	40	45	45	45
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	008	004	006	006
वायु की दिशा	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

30 अप्रैल को कही–कही बूंदा बांदी होने तथा 2 मई को हल्की वर्षा होने के साथ आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (20 **से** 26 **अप्रैल** 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक से मध्यम बादल छाये रहे तथा 0.0 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 35.8 से 38.5 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 14.1 से 20.4 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 58 से 80 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 13 से 40 प्रतिशत एवं हवा 3.1 से 7.5 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖ अगर सिंचाई की सुविधा है तो गेहूँ एवं अन्य रबी फसलो की कटाई के बाद खाली खेत में हरी खाद हेतू ढैंचा तथा सनई की बुवाई करें।
❖ सनई की नरेन्द्र सनई–1 तथा ढैंचा की पंत ढैंचा–1 हिसार ढैंचा–1 आदि उन्नतशील किस्मो का चुनाव करे। सनई हेतू बीज दर 80–90 किलोग्राम/हेक्टेयर तथा ढैंचा हेतू बीज दर 60–80 किलोग्राम/हेक्टेयर रखें।
❖ रबी फसलो की कटाई के बाद खाली खेत से इस मई माह में मृदा नमूना खेत से 10–15 विभिन्न स्थानो से लेना चाहिए। मिट्टी का नमूना 20 सेमी तक की गहराई से लेना चाहिए।
❖ लोबिया व फ्रासबीन मे जड़ एवं तना गलन रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम 500 ग्राम/है0 की दर से प्रयोग करे।
❖ गेहूँ एवं दलहनी फसलों की कटाई एवं मड़ाई का कार्य पूर्ण करें।
❖ देर से बोई गई गेहूँ की फसल मे पत्ती झुलसा रोग एवं पीली गेरुई रोग के नियंत्रण हेतु प्रोपीकोनाजोज 500 मिली/है0 की दर से छिड़काव करे।
❖ दलहनी फसलों जैसे मटर, मसूर तथा चना की कटाई फसल पकने के तुरंत बाद सुबह के समय करें अन्यथा दाने झड़ने से नुकसान होता है। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह से सुखा लें।
❖ विलम्ब से बोई गेहूँ या जौ की फसल अभी हरी हो तो शाम के समय हल्की सिंचाई करें। इसके गेहूँ के दाने सुडोल होंगे। तेज हवा चल रही हो तो सिंचाई न करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ कद्दू वर्गीय सब्जियो मे पत्तियो मे कोणीय धब्बे के नियंत्रण हेतु मैनकोजेब 2.5 किग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।
❖ प्याज मे पत्ती झुलसा रोग के नियंत्रण हेतु टेबुकोनाजोल या डिफिनोकोनाजोल या प्रोपीकोनाजोल का 500 मिली0 प्रति है0 की दर से किसी सर्वांगी कीटनाशी का स्टीकर के साथ मिलाकर छिड़काव करे।
❖ टमाटर व मिर्च की फसल मे सिकुड़े हुए चित्तकबरे पत्ते दिखाई देने पर ग्रसित पौधो को निकालकर नष्ट करे। तथा रस चूसने वाले कीड़ो के नियत्रंण हेतु सर्वागीं कीटनाशी का छिड़काव करें। पछेती झुलसा रोग के प्रकोप से बचाव हेतु मैनकोजेब 2.5 ग्रा0/ली0 या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3.0 ग्रा0 प्रति ली0 पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करे।
❖ लहसुन की फसल इस माह के अन्त तक फसल तैयार हो जायगी। फसल काटने से 15 दिन पूर्व सिंचाई बन्द कर दें।
❖ मटर की पकी हुई फसल की कटाई करे व पौधो को 1–2 दिन तक खेत में सूखने दे।
❖ हल्दी, अदरक एवं अरबी की बुवाई करे।
❖ ब्लास्म ब्लाइट या एन्थ्रेक्नोज का प्रकोप होने पर 0.1 प्रतिशत कार्वेन्डाजिम (1.0 ग्राम/लीटर) का छिड़काव करना चाहिए।
❖ जब आम का फल मटर के दाने के बराबर हो जाय तो सिंचाई शुरू कर देनी चाहिए।
❖ गुम्मा रोग से ग्रस्त बौर को तोड़कर निकाल देना चाहिए।
❖ थाले बनाकर 10–15 दिनों के अन्तराल पर दो–तीन सिंचाई करनी चाहिए।
❖ फलों को गिरने से रोकने के लिए 20 पी0पी0एम0, एन0ए0ए0 (0.02 ग्राम/लीटर) का छिड़काव करना चाहिए।

पशुपालन प्रबन्धः

❖ भेड़ के बच्चों में एंटरीटॉक्सिमिया और भेड़ पोक्स का टीकाकरण करवाए।
❖ इस गर्मी के दिनों में पशुओं के लिए पानी की उचित व्यवस्था करें। पीने के पात्र को साफ रखना चाहिए और दिन के समय पशुओ को कम से कम चार बार पानी जरूय पिलाये।
❖ पशुओं में मेस्टाईटिस के लक्षण दिखाई देने पर इसका तुरंत इलाज करें।

- इस माह तापमान अधिक होने के कारण, पशुओं में निर्जलीकरण, शरीर में लवण व भूख में कमी तथा उत्पादन आदि में गिरावट की समस्या हो जाती है। इसलिए पशुओं को उच्च तापमान से बचाने के लिए उचित उपाय करें।
- मुर्गियों के अधिक उत्पादन प्राप्त करने के लिए उनके आवास के तापमान का विशेष ध्यान रखें, उन्हें खाने के लिए सन्तुलित आहार दें तथा साफ–सुथरा एवं ताजा जल उपलब्ध करायें।
- पशुओं के बैठने का स्थान समतल होना चाहिए ताकि उनकी उत्पादन क्षमता प्रभावित न हो तथा इस समय नवजात पशुओं के रख–रखाव पर विशेष ध्यान दें। बैठने का स्थान समतल ना होने पर पशु खड़ा रहेगा जिससे वह तनाव में आ सकता है और उत्पादन क्षमता प्रभावित होगी।
- जानवरों में प्रसव दर को ध्यान में रखते हुए पशुशाला को अच्छी तरह साफ–सुथरा, सूखा, रोशनीदार, हवादार होना चाहिए। इसके लिए नालियों में तथा आस–पास सूखे चूने का छिड़काव करें तथा जानवर के बैठने के स्थान पर सूखा चारा अथवा सूखी घास बिछा दें। प्रसव के उपरांत पशु पालक स्वच्छता की ओर विशेष ध्यान दें।
- भैंस के 1–4 माह के नवजात बच्चों की आहार नलिका में टाक्सोकैराविटूलूरम (केचुआँ/पटेरा) नामक परजीवी पाए जाते है। इसे पटेरा रोग भी कहते है। समय से उपचार न होने की दशा में लगभग 50 प्रतिशत से अधिक नवजात की मृत्यु इसी परजीवी के कारण होती है। इस रोग की पहचान – नवजात को बदबूदार दस्त होना और इसका रंग काली मिट्टी के समान होना, कब्ज होना, पुनः बदबूदार दस्त होना व इसके साथ केचुआँ या पटेरो का गोबर के साथ आना, नवजात द्वारा मिट्टी खाना आदि लक्षणों के आधार पर इस रोग की पहचान की जा सकती है। रोग की पहचान होते ही पीपराजीन नामक औषधी का प्रयोग कर सकते हैं तथा निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार तत्काल उपचार करायें।
- पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15 सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिलाना लाभकारी होता है। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

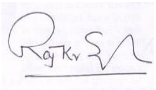

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर